1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा हृणीयथा:। सामवेद227

हे मनुष्य क्रोध मत कर।

O ye Human! Never be angry or wrathful.

वर्ष 38, अंक 45 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 21 सितम्बर, 2015 से रविवार 27 सितम्बर, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द: 192 वार्षिक शुल्क: 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

पूर्ण विश्वास के साथ यज्ञ करें-डेंगू आदि रोग दूर भगाएं -महाशय धर्मपाल

सभा और एम.डी.एच. के सहयोग से 10 दिनों में 500 से अधिक सार्वजनिक स्थानों पर यज्ञों का आयोजन होगा

दिल्ली में लगातार बढ़ रहे प्रदूषण एवं डेंगू आदि प्रकोप को वैदिक विधि द्वारा रोकने के लिए महाशय धर्मपाल जी ने दिल्ली के प्रत्येक क्षेत्र में सर्व रोग निवारण यज्ञ करने का संकल्प व्यक्त किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने महाशय जी के इस संकल्प से प्रेरित होकर समस्त आर्य संस्थानों एवं आर्य समाजों को प्रत्येक स्तर पर यज्ञ आयोजित करने का आह्वान किया। इस योजना का शुभारंभ एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल में प्रात: हुए यज्ञ के माध्यम से किया गया। महाशय धर्मपाल जी स्वयं इस यज्ञ के यज्ञमान बनें। सैंकड़ों बच्चों ने इसमें आहुतियां देकर वातावरण को शुद्ध रखने का संकल्प लिया। महाशय धर्मपाल जी ने बच्चों को बताया कि वातावरण यज्ञ करने से निश्चित रूप से शुद्ध होता है। इसके ऊपर हमें पूरा विश्वास रखना चाहिए तथा विशेष औषधियां इस मौसम में इस वातावरण को शुद्ध करने में लाभ करती हैं। अतएव आप सब भी अपने-अपने परिवारों में, अपने-अपने घरों में सार्वजनिक स्थानों में अवश्य यज्ञ करें। कार्यक्रम में उपस्थित एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल के चेयरमैन श्री सत्यानन्द आर्य जी ने सभी का हार्दिक धन्यवाद किया। सभी अतिथियों के लिए भोजन की व्यवस्था ...शेष पेज 4 पर

- *एम.डी.एच. से सामग्री प्राप्त कर अपने-अपने क्षेत्रों में सार्वजनिक स्थानों/पार्कों में यज्ञ करें*
- *हवन सामग्री व घी प्राप्त करने के लिए सभा कार्यालय में श्री संदीप आर्य जी, मो. 9650183339 पर संपर्क करें*

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य समाज नेपाल के सहयोग से

नेपाल में भूकम्प पीड़ितों को राहत एवं आवास निर्माण कार्य का दूसरा चरण प्रारम्भ

स्ट्रक्चर में दीवार खड़ी करते हुए।

भूकम्प पीड़ितों को वितरण हेतु वस्त्र सौंपते हुए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य समाज नेपाल के सहयोग से नेपाल में अप्रैल 2015 को आये भीषण भूकम्प से प्रभावित हुए लोगों को राहत देने का दूसरा चरण प्रारम्भ हो गया है। राहत कार्य के पहले चरण में आर्य समाज द्वारा नेपाल के सिंधुपाल चौक जिले के फटकशिला गांव के लगभग 750 परिवारों में खाद्य सामग्री का वितरण किया गया था। ...शेष पेज 7 पर

- *35 परिवारों को आशियाना देगा आर्य समाज*
- *साधारण भूकम्परोधी स्ट्रक्चर का एक मकान बनाने पर व्यय होंगे 80000/- (नेपाली रुपये)*

दूसरा जिन्ना-नया पाकिस्तान!

विशेष संपादकीय-अवश्य पढ़े पेज 2 पर

क्या सच को चूहे खा गये?

क्रान्तिकारी वे थे जो अपना सर्वस्व इस देश पर लुटा गये जिनमें एक नाम था नेताजी सुभाषचन्द्र बोस। लेकिन नेताजी को लेकर यहां एक प्रश्न अभी तक अनुत्तरित है कि नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की मौत कैसे हुई? या नेता जी कहां है?

गुजरती हुई सदी में कुछ लोग ऐसे होते है जिनका जिकर बार- बार किया जाता है और कहा ...शेष पेज 7 पर

स्वाध्याय

दीनता त्यागपूर्वक जीवन में दृढ़ता

क्रत्वः समह दीनता प्रतीपं जगमा शुचे।मृला सुक्षत्र मृलय।।

-ऋ.7/89/3

ऋषि - वसिष्ठः। देवता-वरुणः।। छन्दः-आर्षीगायत्री।।

शब्दार्थ- समह=हे तेजोयुक्त! शुचे=हे दीप्यमान! दीनता=दीनता, अशक्तता के कारण मैं क्रत्वः=अपने क्रतु से, संकल्प से, प्रज्ञा से, कर्त्तव्य से प्रतीपम्= उलटा जगम= चला जाता हूं सुक्षत्र=हे शक्तिवाले! मृल=मुझे सुखी कर। मृलय=मुझे सुखी कर।

विनय - हे मेरे तेजस्वी स्वामिन्! मुझ दीन की प्रार्थना सुनो। मैं इतना दीन हूं, इतना अशक्त हूं कि अपने कर्त्तव्य के विरुद्ध आचरण कर देता हूं। मैं जानता हुआ कि यह करना नहीं चाहिए, फिर भी कर देता हूं। मैं कई शुभ संकल्प करता हूं कि आज से नित्य व्यायाम करूंगा, नित्य सन्ध्या करूंगा, पर दीनतावश इन्हें निभा नहीं सकता। हृदय में कई अच्छी-अच्छी प्रज्ञाएं (बुद्धियां) स्थान पाती हैं, पर झूठे लोक-लाज के वश में उन पर अमल करना शुरू नहीं करता। उनके विरुद्ध ही चलता जाता हूं। यह मैं जानता होता हूं कि मेरा 'क्रतु' क्या है-कर्त्तव्य कर्म क्या है, अन्दर से दिल कहता जाता है कि तू उलटे मार्ग पर चला जा रहा हे, फिर भी मैं दुर्बल किसी भय का मारा हुआ, उसी उलटे मार्ग पर चलता जाता हूं। हे दीप्यमान देव! हे मेरे स्वामिन्! तू मुझे वह तेज क्यों नहीं देता जिससे मैं निर्भय होकर अपने कर्त्तव्य पर डटा रहूं, किसी के कहने से या हंसी उड़ाने से उलटा आचरण करने को प्रवृत्त न होऊं, किसी क्लेश से डरकर अपने 'क्रतु' को न छोड़ूं। मुझे यह अवस्था बड़ी प्रिय लगती है, परन्तु दीनतावश मैं इस अवस्था को प्राप्त नहीं कर रहा हूं। हे 'सुक्षत्र'! हे शुभ बलवाले। मुझे अदीन बना दे। मैं दीनता का मारा हुआ तेरी शरण आया हूं। इस दीनता के कारण मुझसे सदा उलटे काम होते रहते हैं और मेरा अन्तरात्मा मुझे कोसता रहता है, इसलिए मैं सदा बेचैन रहता हूं। हे प्रभो! मुझे सुखी कर। मुझमें तेज देकर मेरी बेचैनी दूर कर। इस अशक्तता के कारण मैं जीवन में पग-पग पर असफल हो रहा हूं- मेरा जीवन बड़ा निकम्मा हुआ जा रहा है। हे प्रभो! क्या कभी मेरे वे सुख के दिन न आएंगे जब मैं अपने क्रतु पर दृढ रहा करूंगा, अपने संकल्पों पर अटल रहा करूंगा? हे मेरे स्वामिन्! ऐसी शक्ति देकर अब मुझे सुखी कर दो, मुझे सुखी कर दो।

साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।

मो. 09540040339

सम्पादकीय

दूसरा जिन्ना-नया पाकिस्तान!

अखंड भारत एक वह शब्द है जो हर भारतीय को गर्व कराता है कि अब हमारा देश खंड-खंड नहीं होगा और हम अखंड राष्ट्र के रूप में दुनिया के सामने सीना ताने खड़े रहेंगे। किन्तु यह बात तो हम 1910 में भी कहते थे, और आज भी कह रहे हैं, ज्यादा पुराना इतिहास नहीं उठाता, न ही चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल का भारत का मानचित्र दिखा रहा हूं। बस आखें खोलने के लिये वह नक्शा काफी है जब भारत की सीमा 13 अगस्त 1947 को ईरान-अफगानिस्तान से मिलती थी और अखंड भारत कहते-कहते 14 अगस्त 1947 यानि कि एक दिन बाद हमारा भारत, लाहौर और ढाका भी अपने हाथों से गवां चुका था। हमने फिर कहा अखंड भारत और कुछ दिन बाद कश्मीर का आधा हिस्सा भी चला गया। पर हमने हार नहीं मानी और अखंड भारत कहते- कहते 1962 में तिब्बत और कश्मीर का वह हिस्सा गवां दिया जो अक्साई चिन कहा जाता है। हम अब भी अपने देश को अखंड भारत कहते हैं और कब तक कहेंगे पता नहीं! क्योंकि मीडिया के मुताबिक माने तो भारतीय मुस्लिमों का नया मसीहा अर्थात् नया जिन्ना औवेशी खड़ा हो गया है जो माईक थामें कह रहा है कि 60 साल से तुम बोलते रहे और हम सुनते रहे, तुम हमे गूंगा, बहरा समझे हो अब वे दिन गये जब तुम बोलते थे और हम सुनते थे अब हम बोलेगें तुम सुनना, उसने कहा मैं हिन्दुओं से कहता हूँ जब तुम गाय को मारकर खाओगे तो तुम्हें उसके टेस्ट का पता चलेगा। शायद यह भारत सरकार को वो चुनौती थी जो माउंटबेटन को भी जिन्ना ने दी थी कि मुझे गाय का गोस्त खाना है। हिन्दू मुझे रोकेगा जो मेरे लिये अहसहनीय होगा। हमें अलग ही देश दे दीजिए। चूंकि उस समय मुस्लिम रियासते जिन्ना के साथ थीं और मुस्लिम बाहुल इलाके नये देश नये ध्वज की चाह में पलक-पांवड़े बिछाये बैठे थे।

महात्मा गांधी ने इस मजहबी पागलपन का विरोध कर कहा था, ''मुझे विश्वास है कि दोनों धर्म के लोग हिन्दू और मुसलमान शान्ति और सौहार्द बनाकर एक साथ रह सकते हैं।'' महात्मा गांधी का यह बयान आज भी धर्मनिरपेक्ष दल रट रहे हैं। पर उस वक्त का जिन्ना कहता था कि हिन्दू और मुसलमान दो अलग-अलग संस्कृतियां हैं जिसमें दोनों एक दूसरे के विपरीत हैं और विपरीत संस्कृति का मेल संभव नहीं है। यह तब का जिन्ना था पर आज का जिन्ना कह रहा है कि हिन्दुस्तान में हम 25 करोड़ हैं तुम 100 करोड़ हो 15 मिनट के लिए पुलिस हटा दो हम बता देगे कि हम क्या हैं। पर इस जिन्ना के बयान में एक सच निकलकर आया कि सरकार के आंकड़ों में मुस्लिम आबादी 17.22 करोड है और औवेसी बन्धुओं के आंकड़े 25 करोड़ हैं पता नहीं कौन सही है, कौन गलत पर इतना पता है कि उस समय देश में 18 प्रतिशत मुस्लिम थे जब भारत खण्डित हुआ था और अब भी आंकड़ें उसी हिसाब से हैं। 18 प्रतिशत पर पाकिस्तान बना था अब फिर यह आंकड़ा उसी दिशा में बढ़ रहा है। सोचने की बात यह कि जब नया जिन्ना आ गया तो निश्चित ही पाकिस्तान भी आ जायेगा तब मुस्लिम रियासतें साथ थीं आज भारत के मुस्लिम बाहुल्य राज्य साथ हैं। सोचने का काम अब हमारे अकेले का नहीं है-आप सबका भी है।

-सम्पादक

ग्रन्थ परिचय

गोकरुणानिधि

प्रश्न 1: ऐसा सुनने में आया है कि महर्षि ने पशुओं की, विशेषकर गौओं की, रक्षा के उद्देश्य से भी कोई ग्रन्थ लिखा था। उसका क्या नाम है?

उत्तर : हां! महर्षि ने सभी पशुओं की हिंसा रोक कर उनकी रक्षा करने के उद्देश्य से 'गोकरुणानिधि' नामक पुस्तक लिसी है। चूंकि गौओं के दूध और बैलों से सबसे अधिक हित होता है, अत: उन्होंने गौ की रक्षा पर अधिक बल दिया है। वैसे सभी पशुओं की सुरक्षा के लिए लिखा है।

प्रश्न 2: पशुओं की रक्षा करके महर्षि क्या सिद्ध करना चाहते हैं?

उत्तर : इससे मुख्य रूप से महर्षि दो प्रकार के उद्देश्यों की पूर्ति चाहते हैं:-

1. सर्वशक्तिमान् ईश्वर की तरह सब मनुष्य अपने अन्दर दया और न्याय के भाव उत्पन्न करके स्वार्थपन से कृपापात्र गाय आदि पशुओं का विनाश न करें। उनकी दृष्टि में वे लोग तिरस्करणीय हैं, जो अपने लाभ के पीछे सबके सुखों का नाश करते हैं।

2. इस पुस्तक का दूसरा उद्देश्य है- गाय आदि पशुओं को जहां तक सामर्थ्य हो बचाया जाये जिससे दूध, घी और खेती बढ़ने से सबको सुख बढ़ता रहे।

प्रश्न 3: यह बहुत छोटा-सा ग्रन्थ है। इसको मुख्य रूप से उस समय के ब्रिटिश राज्य की सम्राज्ञी श्रीमती राजराजेश्वरी श्री विक्टोरिया महाराणी को दृष्टि में रखकर ही विनय की गई है कि वे पशुओं की हिंसा न होने दें।

प्रश्न 4: पुस्तक का विषय किस भाषा में है?

उत्तर : हिन्दी भाषा में ही पुस्तक का विषय प्रस्तुत किया गया है।

प्रश्न 5: विषय को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है?

उत्तर : इसमें पशुओं से मिलने वाले दूध एवं उनकी सन्तानों से होने वाले लाभों का औसत रूप से मूल्यांकन व गणना की गई है कि एक पशु अपने जीवन में कितने मनुष्यों के लिए हितकारी है। मुख्य रूप से गौ से मिलने वाले दूध से कितने लोगों का पालन-पोषण होता है तथा उसकी सन्तान बैल से कृषि आदि में कितना लाभ होता है, सबका विस्तृत वर्णन है।

प्रश्न 6: वृद्ध होने पर गाय अनुपयोगी हो जाती है, दूध नही देती व भार रूप हो जाती है। तब इनकी रक्षा की क्या आवश्यकता है?

उत्तर : महर्षि ने बड़े मार्मिक शब्दों में ऐसे गौ आदि की तुलना वृद्ध माता-पिता के साथ करते हुए उन्हें भी संरक्ष्य माना है। जीवन में प्रदान किये गये दुग्ध आदि लाभों के कारण वे अहिंस्य हैं ऐसा कहा है।

प्रश्न 7: पुस्तक में कितने अध्याय है?

उत्तर : यह पुस्तक निम्नलिखित तीन भागों में विभक्त है जिन्हें प्रकरण नाम दिया गया है-1. समीक्षा प्रकरण, 2. नियम प्रकरण 3. उपनियम प्रकरण। मुख्य विषय समीक्षा प्रकरण में है।

प्रश्न 8: नियम प्रकरण आदि से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : महर्षि ने समीक्षा प्रकरण के प्रारम्भ में 'गोकृष्यादि रक्षिणी सभा' नामक सभा के निर्माण का उल्लेख किया है। इसका उद्देश्य गौ आदि पशुओं और कृषि आदि कर्मों की रक्षा करना था। इस सभा के जो अधिकारी व सदस्य बनना चाहते थे, उनके लिए अगले दो प्रकरणों में नियमों व उपनियमों का उल्लेख किया है। **साभार : ग्रन्थ परिचय**

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।

-मो. 09540040339

"चारों वेद पूछते हैं-राजनीति का अर्थ"

व्यंग्य में छिपी सत्यता को स्वामी राम स्वरूप जी बखूबी उकेरने में कामयाब रहे हैं। कल की राजनीति और राजनेता कैसे थे और आज की राजनीति और राजनेता कैसे हो गये हैं यह वृत्तांत देखने योग्य है। लेखक ने 'भारत' शब्द की व्याख्या भी बखूबी की है। आर्य सन्देश के प्रबुद्ध व युवा पाठक निश्चित ही इस लेख से कुछ सीख अवश्य लेंगे। **-सम्पादक**

कहावत बहुत पुरानी है कि किसी अभिमानी स्वार्थी, हठधर्मी तथा दुराग्रही का घर एक सज्जन पुरुष के घर के पास था। वर्षा में दुराग्रही की छत पर लगे पतनाले का पानी उस सज्जन के घर में गिरता था और परिवार को परेशान करता था। लाख समझाने पर भी वह दुराग्रही उस पतनाले को वहां से नहीं हटाता था। अंत में समस्या पंचायत के सामने रखी गयी। पंचों ने उस हठी को बड़ी गम्भीरता से समझाया कि वह अपना पतनाला वहां से हटा ले जिससे पड़ोसी सज्जन के परिवार को परेशानी न हो। सब कुछ भली-भांति सुनकर उस दुराग्रही ने अंत में अपना निर्णय दिया ''पंचों की बात सिर माथे पर, लेकिन पतनाला वहीं रहेगा।''

सम्भवतः यही कहावत आज नेताओं, आन्दोलनकारियों और जनता के बीच चरितार्थ हो रही है। प्रत्येक चुनाव में नेताओं द्वारा किये झूठे वादे, फिर मंहगाई, गरीबी अन्याय एवं असुरक्षा इत्यादि असंख्य समस्याओं से पीड़ित असहाय जनता अपनी व्यथा पिछले 68 वर्षों से सुनाए जा रही है परन्तु जनता की अनदेखी करने का कहीं यह कारण नेताओं का पतनाले की तरह दो टूक यही एक जवाब तो नहीं है कि जनता की फरियाद सिर माथे लेकिन ''कुर्सी से चिपकने, अपना डण्डा चलाने, साख को कायम रखने तथा अपनी एवं परिवार की सुरक्षा व सुख-सुविधा इत्यादि की पूर्ति के लिए झूठे चुनावी वादे, चुनावी छींटाकशी, वोटों की खरीद-फरोख्त, गरीबों का खून चूसना, निर्दोषों का कत्लेआम, चोरी, डकैती, विदेशी छत्रछाया, बेमिसाल हवाला, चारा, तंदूर तथा बोफोर्स इत्यादि काण्डों का उदय और पांच वर्षों में एक बाद अथवा सौ बार चुनावी स्टंट इत्यादि की रचना तो वैसी की वैसी ही रहेगी।

लगता है कि बाल गंगाधर तिलक के ''स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'' के नारे का सदुपयोग स्वतंत्रता के बाद हमारे अधिकतर नेताओं ने यह कहकर चरितार्थ किया है कि कोई भी हथकण्डा अपनाकर कुर्सी हथियाना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

वाह रे! हमारी अड़सठ वर्षो की स्वतंत्रता जिसने नेताओं को प्रत्येक क्षेत्र में स्वतंत्र और प्रजा को उसके समक्ष परतंत्र कर दिया है। माताओं ने ज़ेवर तथा बेटे कुर्बान किये, अमीरों ने धन व गरीबों ने खून बहाया मां, बहन, बेटियों की इज्ज़त पर कुठाराघात, परिवार के परिवारों का कत्लेआम, भुखमरी, मकान, दुकान, घर-बाहर सबकी बर्बादी जैसी रक्तरंजित, भीषण आहूति देकर प्राप्त की हुई स्वतन्त्रता आज कई स्वार्थी नेताओं की जेबें भरकर जनता को असुरक्षा एवं गरीबी के गम्भीर, भयावह वातावरण में सिसक-सिसक कर रोने-जीने पर मजबूर कर देगी। यह दृश्य देखकर तो शायद गांधी, सुभाष, तिलक, पटेल, भगत सिंह, झांसी की रानी, नाना जी, तांत्या टोपे इत्यादि असंख्य शहीदों की कुर्बान हुई रूहें स्वर्ग में कांप जाती होंगी। क्या इतिहास एवं दु:खी जनता की आहें हमारे इस अपराध को क्षमा करेंगी?

वेद, शास्त्रों में कहा है कि रंक को राजा और राजा को रंक या तो वेदों का ज्ञाता कोई तपस्वी योगी, ऋषि-मुनि कर सकता है अथवा स्वयं भगवान। परन्तु वाह री महाठगिनी माया जिसने ऋषि और भगवान को अलग-अलग न दिखाकर अपितु दोनों को एक ही रूप में प्रकट करके प्रस्तुत कर दिया और वह रूप है वर्तमान की राजनीति में दक्ष राजनेता का जिसे कहीं-कहीं तो गरीब जनता अथवा चमचे उसे माई-बाप और भगवान तक की पदवी पर बैठा कर रखते हैं क्योंकि जहां पिछले तीनों युगों में ऋषि एवं परमेश्वर से धन-सुख इत्यादि कामना पूर्ति के लिए यज्ञ, योगाभ्यास एवं वर्षो प्रार्थना करनी पड़ती थी, अब यह काम नेताओं के जमाने में आसान हो गया है। अब केवल चुनावों के दिनों में आम नेताओं को उचित-अनुचित साथ देकर वोट इकट्ठे कर दें। यदि नेताजी जीत गये तब तो आपकी और नेताजी की पौ-बारह। फैक्ट्री इत्यादि जिस मर्जी का लाईसेंस लें, पेट्रोल पम्प, मकान, दुकान, जमीन, एजेंसी, परिवार के बच्चों के लिए कोई भी सीट बिना लियाकत और बिना लाईन में लगे वर्षों अथवा महीनों में नहीं कुछ ही दिनों में आप प्राप्त करके माला-माल हो जाएं। हां। रही बात यह कि आपके विरोध में किसी ने आवाज़ उठाई तो याद रहे कि प्रशासन को नेताओं की आज्ञा मानने का भी प्रायः ठेका है। न्याय-अन्याय से उन्हें कोई सरोकार नहीं। 68 वर्ष की आज़ादी में हमें नेताओं की नेतागीरी से यही सब कुछ तो आशीर्वाद के रूप में प्राप्त हुआ है। प्रश्न उठता है कि राजा अथवा राजनेताओं की क्या आवश्यकता है? श्री राम, योगेश्वर श्रीकृष्ण, राजा हरिश्चन्द्र तथा विश्वामित्र आदि असंख्य महापुरुषों द्वारा अपनाई वैदिक संस्कृति में ही इसका उपयुक्त उत्तर है। भगवद्गीता श्लोक 10/22 में श्री कृष्ण ने अपने आपको वेदों में सामवेद कहा है। उसी सामवेद का मंत्र 314 ही देखें, जिसमें प्रजा राजा से कहती है -'हे शत्रुनाशक एवं शांति प्रदान करने वाले राजा! हमने आपके बैठने के लिए आपका यह सिंहासन बनाया है। आप अपने नेताओं तथा राज्य आधिकारियों सहित आकर सिंहासन (कुर्सी) पर विराजमान होवें जिससे आप हम प्रजाओं के रक्षक और उन्नतिकर्ता होवें। आप हमें धनों को देवें तथा शांति स्थापित करके हम प्रजाजनों को आनन्दित करें।''

अर्थववेद मंत्र 2/7/1-4,7 में कहा गया है कि राजा प्रजा से 'कर' इसलिए ले कि वह दुष्टों को दण्ड देकर प्रजा की सुरक्षा करें। ऋग्वेद मंत्र 1/84/8,9 में स्पष्ट कहा गया है कि जो मनुष्य को धनयुक्त करे, आलसियों को पुरुषार्थी बना दे तथा विज्ञान की उन्नति से देश को प्रतिष्ठित कर दे उस पुरुष को ही प्रजा राजा स्वीकार करे। जो शत्रुओं के बल का हनन करके प्रजा को दु:खों से हटाकर सुखयुक्त करने में समर्थ हो तथा जिसकी सेना के भय और पराक्रम से शत्रुसेना का नाश निश्चित हो, प्रजा उसे ही राजा स्वीकार करे। यजुर्वेद मंत्र 34/13 में प्रजा राजा से कहती है कि हे राजन! आप हमारे शरीरों के तथा हमारे पुत्र-पौत्र और गौ आदि पशुओं के रक्षक हों। यजुर्वेद मंत्र 11/14 में राजा को सबका रक्षक, धार्मिक एवं वेद का ज्ञाता कहा है। ऊपर लिखे इन सभी मंत्रों में राजा व राजनेताओं को प्रजा द्वारा निर्वाचित होकर प्रजा की रक्षा, प्रजा को आलस्यहीन करके कर्त्तव्य बोध कराना, उसमें धनवृद्धि, परिवार की रक्षा तथा शांति स्थापना आदि जैसे अनेक दायित्व सौंपे गये हैं। ईश्वरीय वाणी वेद ने मूलतः वेदज्ञ राजा/राजनेताओं का कर्त्तव्य प्रजा की रक्षा एवं धर्म स्थापना कहा है। बीते तीनों युगों में सतयुग के राजा मनु से लेकर द्वापर के राजा युधिष्ठिर एवं उनके मंत्रियों के जीवन में यही सब वैदिक गुण/राजनीति की झलक महाभारत एवं रामायण आदि सद्ग्रन्थों में देखने को मिलते हैं।

वाल्मीकि रामायण, अयोध्या काण्ड, प्रथम सर्ग, श्लोक छः में महाराज दशरथ अपने गुणवान मंत्रियों से कहते हैं कि अपने पूर्वजों की भांति मैंने (दशरथ) भी इस विशाल राज्य का प्रमाद रहित होकर यथाशक्ति प्रजा का पुत्रों के समान पालन किया है। प्रजाजनों के हित की कामना करते हुए मेरा (दशरथ) शरीर जराजीर्ण हो गया है। पराक्रम द्वारा सेवन करने योग्य तथा अजितेन्द्रिय पुरुषों से न उठा सकने योग्य, इस संसार की धर्म रूपी ...शेष पेज 6 पर

संस्कृतम् आचारः परमो धर्मः (सदाचारः)

सताम् आचार सदाचारः इत्युच्यते। सज्जनाः विद्वांसो यथा आचरन्ति तथैव आचरणं सदाचारो भवति। सज्जनाः स्वकीयानि इन्द्रियाणि वशे कृत्वा सर्वैः सह शिष्टतापूर्वकं व्यवहारं कुर्वन्ति। ते सत्यं वदन्ति, असत्यभाषणाद् विरमन्ति, मातुः पितुः गुरुजनानां वृद्धानां ज्येष्ठानां च आदरं कुर्वन्ति, तेषाम् आज्ञां पालयन्ति, सत्कर्मणि प्रवृत्ता भवन्ति, असत्कर्मभ्यश्च निवृत्ता भवन्ति। तद्वत् आचरणेन मनुष्यः सदाचारी धार्मिकः शिष्टो विनीतो बुद्धिमान् च भवति।

सदाचारस्य सत्तयैव संसारे जन उन्नति करोति। देशस्य राष्ट्रस्य समाजस्य जनस्य च उन्नत्यै सदाचारस्य महती आवश्यकता वर्तते। सदाचारेणैव जना ब्रह्मचारिणो भवन्ति। सदाचारेणैव शरीरं परिपुष्टं भवति। सदाचारेण बुद्धिः वर्धते। सदाचारेणैव मनुष्यः परोपकारकरणं सत्यभाषणम् अन्यच्च सत्कर्म कर्तुं प्रवृत्तो भवति। सदाचारी न पापानि चिन्तयति, अतः तस्य बुद्धिः निर्मला भवति। निर्मलबुद्धिश्च लोकस्य देशस्य च हितचिन्तने प्रवृत्तो भवति। अतएव पूर्वैः महर्षिभिः आचारः परमो धर्मः' इत्युक्तम्। संसारे सदाचारस्यैव महत्त्वं दृश्यते। ये सदाचारिणो भवन्ति, त एव सर्वत्र आदरं लभन्ते महाभारतेऽपि अत एवोक्तं यद् मनुष्यैः सदा स्ववृत्तस्य रक्षा कार्या, धनमायाति याति च। यः सदाचारेण हीनोऽस्ति स वस्तुतः पतितोऽस्ति, धनहीनो न पतितोऽस्ति।

वृतं यत्नेन संरक्षेद्, वित्तमेति च याति च। अक्षीणो वित्तः क्षीणो, वृत्ततस्तु हतो हतः।।1।।

ब्रह्मचर्यस्य वेदेऽपि महिमा वर्णितोऽस्ति। यद् ब्रह्मचर्यस्य सदाचारस्य वा महिम्ना देवा मृत्युमपि स्ववशेऽकुर्वन्।

ब्रह्मचर्येण तपसा, देवा मृत्युमुपाघ्नत।।2।।

मनुष्यस्तदा सच्चरित्रो भवति यदा स मातृवत् परदारेषु व्यवहरति, कन्याः बालिकाश्च स्वभगिनीवत् पश्यति। कामवासनां निगृह्य संयत इवाचरति। यो नैवमाचरति स दुश्चरित्रः दुराचार इति कथ्यते।

सदाचारपालनेनैव श्रीरामचन्द्रो मर्यादापुरुषोत्तमोऽभवत्। एतदर्थमेव लक्ष्मणेन शूर्पणखाया नासिका छिन्ना। सदाचाराभावेनैव चतुर्वेदविदपि रावणो राक्षस इति कथ्यते। अतः सर्वैः स्वोन्नत्यै सदा सदाचारः पालनीयः।

रचनानुवादकौमुदी

(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सब धर्मों में श्रेष्ठ धर्म संगठन धर्म- महर्षि दयानन्द सरस्वती

'धर्म' जितना सरल, सहज और प्रचलित शब्द है उससे कई गुना अधिक यह भाव में गम्भीर, आचरण में कठिन और तत्त्व में रहस्यमय है। धर्म के सम्बन्ध में मनुस्मृति के बाद अनेक स्मृतियां, अनेक व्याख्याकार, अनेक प्रवक्ता, अनेक संप्रदाय, अनेक मत संसार में प्रचलित हैं और प्रकोष्ठ में स्थित यह शब्द अपना तात्त्विक स्वरूप अल्पतम लोगों की ही बुद्धि में प्रविष्ट हो सका। नहीं तो आज सारे विश्व का एक ही धर्म होता। जिन्होंने भी धर्म का रहस्य सुना, जाना और समझा है। वे धर्म को अपना परम हितकारी परम मित्र मानते रहे हैं यह धर्म धन, प्राण और सम्बन्धों की अपेक्षा महान् है। सब कुछ लुट जाये पर यह धर्म हमसे कभी न लुटे। क्योंकि 'धर्मो रक्षति रक्षितः' की उक्ति फिर चरितार्थ नहीं हो सकेगी।

धर्म के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न होते रहते हैं। धर्म के धारक ज्ञाता देश, काल और मात्रा को समझकर उनका समाधान खोजते और देते हैं तथा पाते हैं। धर्म का आचरण परम सुखदायक है। अतः सुखस्य मूलं धर्मः सूत्र का आविर्भाव हुआ। जीवन में हम सही देखते हैं जो लोग धर्माचरण में रहते हैं वे बहुत सुखी होते हैं। संगठन धर्म वर्ण धर्म और आश्रम धर्म को पुष्ट करता है और इन्हें स्थायी बनाता है। वर्णाश्रम धर्म सहज प्राकृतिक है। किन्तु जब तक इनकी सुव्यवस्था नही हो जाती तब तक यह बिखरे होंगे और इनके आनन्द का अनुपात भी न्यून होगा। सुखमय मूलं संगठनधर्मः कहने से यह और भी स्पष्ट होगा। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चाहे जितने तेजस्वी हों परन्तु उनमें यदि संगठन नहीं तो वे अस्तित्व खो बैठेंगे। ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यासी चाहे कितने ही प्रबल हों किन्तु यदि इनमें संगठन नहीं तो ये भी अपनी सत्ता से हाथ धो बैठेंगे। अतः महर्षि दयानन्द ने ऋ.भा. भूमिका में वेरोक्त धर्म विषय में सबसे पहले संगठन धर्म का प्रतिपादन किया है।

ऋग्वेद के संगठन सूक्त जो ज्ञान काण्ड का अन्तिम सूक्त है अर्थात् चाहे आप कितने ज्ञानी विज्ञानी हो जाओ किन्तु संगठन को छोड़कर आर्य समाज को छोड़कर अलग मत होना यह सिखाता है। इस संवनन सूक्त का ऋषि संवनन है सबने अपना ध्यान बंटाकर रखने वाला ऋषि संवनन है ऐसा ऋषि ही संगठन की सर्जना और विवेचना करने में सक्षम होता है। संगठन के आवश्यक गुण कर्म होते हैं-

1. संगमन 2. संवाद 3. संज्ञान 4. समुपासना 5. समान मन्त्र 6. समान समिति 7. समान मन 8. समान चित्त 9. समान अभिमन्त्रण 10. समान हवन 11. समान उत्साह 12. समान हृदय 13. सुसहाय 14. सु-अस्तित्व।

यह 14 गुण, कर्म और स्वभाव जिन मनुष्यों और विद्वानों में होगे वे संगठन की संरचना करेंगे। संगठन के लिए जियेंगे और संगठन के लिए मरेंगे। इस संगठन धर्म को सबसे पूर्व महर्षि दयानन्द जी ने वर्णाश्रमधर्मो से पहले स्थान दिया । युगद्रष्टा ऋषि की यही पहचान है। वर्णाश्रम धर्म भारत में सृष्टि के आरम्भ से चला आ रहा है किन्तु उनमें जिस धर्म का अभाव था वह है संगठन धर्म उसको ही महर्षि दयानन्द ने वेदों से सप्रमाण उपस्थापित करक ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में वर्णित किया है। चाहे कोई लाख वर्णाश्रम धर्म का पालन करे किन्तु संगठन के बिना सब शून्य हो जायेगा जिनको परस्पर मिलकर जीवन जीना नहीं आया वे भला धर्म को क्या धारण करेंगे। संगठन धर्म की शुरुआत परिवार से होती है ओर संसार में जाकर पूर्ण होता है। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के भाषार्थ का परिशीलन करें और आर्य समाज नामक ऋषिप्रणीत संगठन को यशस्वी बनायें।

संगठन वेदों का धर्म है, रामायण की शिक्षा है, महाभारत का संदेश है। उपनिषदों का उपदेश है। जिन बातों से जिन क्रियाओं से, जिन भावनाओं से , जिन प्रवृत्तियों से हमारे सगठन के किसी भी अवयव में संगठन के प्रति प्रति प्रतिगामिता का कुचक्र पैदा हो उन्हें हमें सावधानी से देखते हुए परिष्कृत करना पड़ेगा। हम चूड़ियों की तरह बजें नहीं अपितु शरीर के अवयवों की तरह, ब्रह्माण्ड के गृह-नक्षत्रों की तरह संगठित हों। परदोष दर्शन से पूर्व आत्मनिरीक्षण की प्रवृत्ति भी अपनानी पड़ेगी। इस प्रकार सब धर्मों में श्रेष्ठ धर्म संगठन धर्म की आज प्रासंगिकता को देखते हुए महर्षि दयानन्द ने ऋ.भा. भूमिका में वेदोक्त धर्म विषय में पहले ही रेखांकित किया है।

-आचार्य धनञ्जय शास्त्री

पृष्ठ 1 का शेष

पूर्ण विश्वास के ...

की गई थी। कार्यक्रम में विद्यालय के सभी विद्यार्थियों ने एक और संकल्प लिया कि वे विद्यालय एवं आसपास के समस्त वातावरण को साफ करने में अपनी पूरी भूमिका निभाएंगे। यज्ञ के अन्दर सभी अध्यापिकाओं ने आसपास के उपस्थित आर्य समाज के पदाधिकारियों ने आहुति डाली। यज्ञमानों में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य जी, राजीव आर्य जी, श्री प्रेम कुमार अरोड़ा जी एम.डी.एच. परिवार, श्री राजेंद्र कुमार एम.डी.एच. परिवार एवं अनेक आर्यजन विशेष रूप से उपस्थित थे। महाशय जी ने आह्वान किया कि आज से लगातार दिल्ली में हर स्थान पर यज्ञ हों और हम लोग दिल्ली के वातावरण को अच्छा बनाने में जितना भी योगदान दें पाएं उतना हमें अवश्य ही देना चाहिए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं एम.डी.एच. परिवार की ओर से इस आयोजित कार्यक्रम के संदर्भ में एम.डी.एच. परिवार की ओर से प्रत्येक आर्य समाज को एक यज्ञ जो वे सार्वजनिक स्थान पर आयोजित करेंगे 5 किलो हवन सामग्री विशेष औषधि युक्त एवं 2 किलो शुद्ध देशी घी निःशुल्क उपलब्ध कराया जाएगा। साथ ही सभा की ओर से एक बैनर भी तैयार किया गया जो बैनर thearyasamaj.org पर उपलब्ध है। आप इससे डिजाइन ले सकते हैं तथा डॉउनलोड करके अपने क्षेत्रीय स्थानों से प्रिंट कराके अपनी आर्य समाज का नाम नीचे लिखवाकर वहां पर अवश्य लगवाएं जहां पर यज्ञ किया जा रहा है। इस कार्य से और लोगों को भी प्रेरणा मिले ऐसा सभा का आह्वान है। यह कार्यक्रम 4 अक्तूबर तक किए जा सकते हैं तथा सामान लेने की अंतिम तिथि 30 सितम्बर 2015 रहेगी। 30 सितम्बर से पहले जो आर्य समाज अपने लैटर पैड पर ये लिखकर के लाएंगी कि वे मुख्य कार्यक्रम इस पार्क में अथवा इस स्थान पर करने जा रहे हैं उनको यह सामान निःशुल्क उपलब्ध कराया जाएगा। **-महामंत्री**

आर्य समाज कीर्तिनगर में श्रावणी एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी

आर्य समाज कीर्तिनगर के तत्त्वावधान में श्रावणी उपाकर्म एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में वेद प्रचार का 11 दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। दिनांक 3 से 6 सितम्बर 15 तक चले इस कार्यक्रम के अन्तर्गत निकाली गयी प्रभात फेरी में लगभग 200 सदस्यों व आर्यवीरों ने भाग लिया व कीर्तिनगर के विभिन्न पार्कों में प्रतिदिन यज्ञ किया गया। यज्ञ के ब्र. डॉ. प्रियम्वदा वेद भारती जी थे। आर्य कन्या गुरुकुल नजीबाबाद की ब्रह्मचारियों ने सुन्दर भजनों से समा बांध दिया। लगभग 20-22 आर्य परिवारों के युवकों को यजमान बनाया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य द्वारा आर्य वीरों का सम्मान तथा वैदिक सिद्धान्तों को अपने जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया गया तथा डॉ. प्रियम्वदा के अध्यक्षीय संदेश के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। -सतीश चड्ढा, मंत्री

बोध कथाएं
पाप के अन्न का दुष्परिणाम

पूज्य महात्मा हंसराज जी एक बार हरिद्वार के मोहन आश्रम में ठहरे हुए थे। एक वानप्रस्थी उनके पास ही एक कमरे में रहता था। एक दिन वानप्रस्थी सीधा महात्माजी के पास आया और जोर-जोर से रोने लगा। महात्माजी ने पूछा-'क्या हुआ आपको?'

वह बोला-'मैं लुट गया, महात्माजी! मेरी उम्र-भर की कमाई नष्ट हो गयी।'

महात्माजी बहुत घबराये। पूछने पर पता लगा कि वह वानप्रस्थी पिछले कई वर्षा से ईश्वर-भक्ति के मार्ग पर चलता हुआ ध्यान और उपासना की सीढ़ी तक पहुंच चुका था। रात्रि के समय अपने कमरे में बैठ जाता वह। भगवान् का ध्यान करता, ईश्वर की शीतल ज्योति उसे दिखाई देती। उसमें आनन्द से मस्त होकर वह घंटों बैठा रहता। परन्तु कल रात उसके साथ एक अद्भुत घटना घटी। रोते हुए उसने कहा-'मैं ध्यान में बैठा महात्माजी, तो ऐसा प्रतीत हुआ कि रोशनी में लाल दुपट्टे वाली एक नौजवान लड़की खड़ी है। मैंने घबराकर आंखें खोल दीं। समझा, कुछ भूल हो गई है। फिर प्राणायाम किया, फिर ध्यान से ज्योति को देखा, परन्तु वह लड़की अब भी वहीं थी। मैं उसे जानता नहीं, परन्तु बार-बार मेरे सामने आकर खड़ी हो जाती है। मैं ने बार-बार मुंह-हाथ धोकर प्राणायाम करने का प्रयत्न किया है। बार-बार उसे हटाने का प्रयत्न किया है, परन्तु रोशनी में उसके अतिरिक्त कुछ मुझे दिखाई नहीं देता। मेरी तो उम्र-भर की कमाई लुट गई! मैं तो कहीं का न रहा! पता नहीं मुझे क्या हो गया?' वह कहता जाता था और रोता जाता था।

महात्माजी ने पूछा-'किसी बुरे व्यक्ति की संगत में तो नहीं बैठे? कोई बुरी पुस्तक तो नहीं पढ़ी?'

उसने कहा-'ऐसा कुछ नहीं किया मैंने।'

महात्माजी ने कहा-'कल तुम आश्रम से बाहर तो गये होंगे?'

वह बोला-'गया था, एक भण्डारे में। एक सेठ साहब आये हैं। उन्होंने भण्डारा किया था, वहां खाना खाने गया था महात्मा जी ने कहा-जाकर पता लगाओ-वह सेठ कौन है और उसने भंडारा क्यों किया था?' वानप्रस्थी गया। पता लगाकर उसने बताया कि सेठ एक शहर का रहने वाला है। वहां उसने अपनी नौजवान बेटी को एक बूढ़े के पास दस हजार रुपये में बेच दिया था। दो हजार रुपया लेकर वह हरिद्वार आया है कि पाप का पायश्चित्त करने के लिए भण्डारा कर दे।

महात्माजी ने इस बात को सुनकर कहा-'यही वह नौजवान लड़की है, जो तुम्हें दिखाई देती है। तुमने जो कुछ खाया वह पुण्य भाव से दिया हुआ दान नहीं था; पाप की कमाई का एक भाग है-उस हतभाग्य लड़की का मूल्य। जब तक वह अन्न तुम्हारे शरीर से नहीं निकलेगा, तब तक उस दुःखी लड़की का दिखाई देना बन्द न होगा।' यह है पाप का अन्न खाने का परिणाम! इससे आत्मा गिरती है। आगे बढ़ता हुआ मनुष्य पीछे गिरता है।

साभारः बोध कथाएं

नोटः यह पुस्तक सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। प्राप्त करने के लिए मो. 09540040339 पर संपर्क करें।

योग और मोक्ष

यह सभी जानते हैं कि मनुष्य जीवन का उद्देश्य है ब्रह्म को प्राप्त करना। किन्तु ब्रह्म प्राप्ति मनुष्य की यात्रा का आखिरी स्टेशन है। हमने यात्रा कहां से आरम्भ करनी है यह जानना भी परमावश्यक है। बहुत से मनुष्यों की आयु समाप्त हो जाती है यह कहते-कहते कि ब्रह्म को प्राप्त करना है और यात्रा आरम्भ ही नहीं करते, उन्हें ज्ञात ही नहीं होता कि कौन से स्टेशन से हमारी यात्रा आरम्भ होगी। हमारे ऋषि-मुनियों ने बताया है कि मोक्ष या ब्रह्म या मुक्ति तक पहुंचने के लिए यात्रा का आरम्भिक स्टेशन है 'विवेक' यानी उत्तम ज्ञान को विवेक कहते हैं। (सत्यार्थ प्रकाश, नवम समुल्लास, पृष्ठ संख्या 200) पहला साधन 'विवेक' है।

विवेक का गुण-किसी ने एक से पूछा भई तुम्हारा नाम क्या है? उत्तर मिला 'विवेक'! अरे यह तो बहुत अच्छा नाम है। फिर पूछा विवेक तुम रहते कहां हो? उत्तर मिला बुद्धि में। अरे वाह्। क्या कहने। बुद्धि में विवेक रहे फिर तो जीवन सफल होने में कोई शक नहीं, बहुत अच्छा है। बाद में दूसरा मिला, उससे भी पूछा, भई क्या नाम है तुम्हारा? वह बोला मेरा नाम है क्रोध। भई क्रोध कहां रहते हो? उत्तर मिला बुद्धि में रहता हूं। पूछने वाले ने कहा ऐसा कैसे हो सकता है। विवेक बोला बुद्धि में मैं रहता हूं। क्रोध ने कहा आप कहते तो ठीक ही हैं, बुद्धि में विवेक ही ही रहता है। किन्तु जब मैं बुद्धि में आ जाता हूं तब विवेक बाहर हो जाता है। अत: क्रोध अधर्म है विवेक धर्म है।

स्वामी दयानन्द ने बताया है कि कोई भी मनुष्य क्षणमात्र भी कर्म, उपासना और ज्ञान से रहित नहीं होता। इसलिए धर्मयुक्त सत्य भाषणादि कर्म करना और मिथ्याभाषणादि अधर्म को छोड़ देना ही मुक्ति का साधन है। (सत्यार्थ प्र. नवम. स. पृ 192)

मुक्ति का साधन प्रथम ''विवेक'' है सत्यार्थ प्रकाश, 9 समु. पृ. 200 पर ऋषि जी लिखते हैं- सत्पुरुषों के संग से 'विवेक' अर्थात् सत्यासत्य, धर्माधर्म और कर्त्तव्याकर्त्तव्य को निश्चय करके पृथक-पृथक् जाने-

1-सत्यासत्य='वेद और सृष्टि नियम के अनुकूल, आप्त विद्वानों का कथन तथा जैसा अपनी आत्मा में जैसा सुख-दु:ख होता है। दूसरे की भी आत्मा में भी वैसा ही जाने। इस प्रकार की शिक्षा सत्य जाने और विपरीत को असत्य जाने।'

2- धर्माधर्म='जिस शिक्षा से यह लोक और परलोक सुधरे वह धर्म और विपरीत अधर्म है।'

3- कर्त्तव्याकर्त्तव्य='जिस-जिस कार्य से जगत का उपकार हो वह कार्य करना और जो कर्म हानिकारक है उसे छोड़ देना ही मनुष्य का परम कर्त्तव्य है।

'विवेक' से यह भरी जाने कि चार प्रकार की अविद्या छोड़े बिना मुक्ति नहीं होती।(यजु. अ. 40,मं.14) अविद्या के चार भाग हैं।

अविद्या चार प्रकार की है-

पहला भाग - जो अनित्य संसार और देहादि में नित्य अर्थात् जो कार्य जगत् देखा, सुना जाता है सदा रहेगा, सदा से है और योगबल से यही देवों का शरीर सदा रहता है वैसी विपरीत बुद्धि होना अविद्या का प्रथम भाग है।

दूसरा भाग- अशुचि अर्थात् मलमय स्त्रादि के शरीर और मिथ्याभाषण,चोरी आदि अपवित्र में पवित्र बुद्धि रखना अविद्या का दूसरा भाग या प्रकार है।

तीसरा भाग - अत्यन्त विषय सेवन रूप दु:ख में सुख बुद्धि करना और किसी भी प्रकार के नशे में सुख समझे यह अविद्या का तीसरा भाग है।

चौथा भाग - अनात्मा में आत्मबुद्धि करना जैसे मूर्ति आदि अनात्म पदार्थ की पूजा करा अविद्या का चौथा भाग है। यह चार प्रकार की अविद्या है।

इसके विपरीत अनित्य में अनित्य और नित्य में नित्य, अपवित्र में अपवित्र और पवित्र में पवित्र, दु:ख में दु:ख और सुख में सुख, अनात्मा में अनात्मा और आत्मा में आत्मा का ज्ञान होना विद्या है।

'विवेक' से यह भी जाने कि ईश्वर के नाम सच्चिदानन्द में सत, चित, आनन्द तीन गुण है। जीव में सत् और चित् दो गुण हैं। प्रकृति में सत एक गुण है।

अब जीव को अपने कर्त्तव्य को अपने कर्त्तव्य का ज्ञान होना चाहिए कि प्रकृति के अन्दर एक गुण है वह जीव को स्वत: प्राप्त है और ईश्वर का आनन्द गुण प्राप्त करने के लिए ईश्वर की और उसे चलने का प्रयास करना चाहिए। जैसे नदी पर्वत से निकलकर भागती जाती है और अपने आधार समुद्र को पाकर शान्त हो जाती है। उसी प्रकार आत्मा का आधार परमात्मा है उसे पाकर ही आत्मा को आनन्द की प्राप्ति होगी तथा जन्म-मृत्यु से छुटकारा होगा। विवेक द्वारा जीव को जब यह ज्ञान प्राप्त होता है कि ईश्वर, जीव और प्रकृति ही सृष्टि और प्रलय के कारण हैं तब वेदों के ज्ञान को आसानी से प्राप्त कर लेता है यह मेरा स्वयं का अनुभव है। अपने भक्त को मनुष्य और पुस्तक तथा सतसंग से ज्ञान प्राप्त कराते उसे देर नहीं लगती जब मनुष्य में तीव्र लगन हो। यहां तक का सब ज्ञान विवेक के अन्तर्गत आता है। पांच क्लेशों की जड़ अविद्या ही है। वह पहले लिखी जा चुकी है।

ईश्वर से योग और मोक्ष का दूसरा साधन वैराग्य है

इस लोक और परलोक के सुख आदि भोग की इच्छा का त्याग करना वैराग्य है। पांच ज्ञानेन्द्रियों के पांच विषय हैं (शब्द,स्पर्श, रस, गन्ध और रूप) इनमें जीव दोषों को देखता है तभी इनसे मिलने वाले क्षणिक सुख को छोड़ता है वही 'वैराग्य' कहलाता है। पराई स्त्री को माता के समान समझें, पराये धन को मिट्टी के ढेले के समान समझें और सब लोगों को अपनी भांति समझें वह मानव है। प्रकृति से प्राप्त सुख त्यागो और भले कार्यों में रुचि लो।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के मुक्ति विषय में पृष्ठ 141 पर लिखा है - (तदयन्त.) फिर उस दु:ख के अत्यन्त अभाव और परमात्मा के नित्य योग करने से जो सब दिन के लिए परमानन्द प्राप्त होता है, उसी सुख का नाम मोक्ष है। सत्यार्थ प्रकाश, सप्तम समुल्लास, पृष्ठ 154 में पातंजलि योग शास्त्र के दो सूत्र भी लिखे हैं। अब हम आपको यह बताना चाहते हैं कि विवेक और वैराग्य के बाद आत्मा का परमात्मा के साथ जुड़ना अत्यावश्यक है। तब तीसरा साधन हुआ अष्टांगयोग।

मुक्ति का तीसरा साधन है 'अष्टांगयोग।'

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।

1. यम- अहिंसा (मन, वाणी और शरीर से किसी को पीड़ा न देना), सत्य (सदा सत्य का व्यवहार करें), अस्तेय (चोरी त्यागें), ब्रह्मचर्य (इन्द्रिय संयम करते हुए वीर्य की रक्षा करनी चाहिए), अपरिग्रह (भोग साधनों के संग्रह में लोभ को त्यागें)। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह 5 यम हैं।

2. नियम - शोच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान ये 5 नियम हैं। शौच (शरीर की बाहर से और अन्त:करण को शुद्ध रखना), सन्तोष (परिश्रम करने के बाद जो प्राप्त हो उसमें सन्तोष करें), तप (द्वन्दों को सहन करते हुए अपने कर्तव्य का पालन करें) स्वाध्याय (आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन करें और अपने दोष दूर करें), ईश्वर प्रणिधान (निष्काम भावना से कर्म करते हुए उन्हें ईश्वर के अर्पण करें)।

3. आसन - सुखासन में बैठ कर प्रात: सायं ईश्वर में मन को मग्न करें।

4. प्राणायाम - मन प्राणों के अधीन है इसलिए तीन बार प्राणायाम करके सन्ध्या समय मन को ईश्वर में लगा दो।

5. प्रत्याहार - प्रत्याहार का अर्थ है पीछे हटना। यहां इन्द्रियों का अपने विषय से पीछे हटना है। हमारा चित्त वासनाओं का भण्डार है इसलिए चित्त में वासना (इच्छा) ही मत आने दो। इन्द्रियां वश में करना ही प्रत्याहार है।

6. धारणा - सन्ध्या करने के लिए आसन पर बैठ कर आंखें बन्द कर मन को भृकुटी में रोकना धारणा है।

7. ध्यान - मन लगातार ईश्वर में लगा रहे वह ध्यान कहलाता है।

समाधि - मन जब ईश्वर में मग्न हो जाये और अपने आपको भूला हुआ सा समझे वह समाधि कहलाती है। मन को बार-बार ईश्वर में लगाने का अभ्यास करना चाहिए।

मुक्ति का चौथा साधन है 'षट्क सम्पति' अर्थात् छः प्रकार के कर्म करना।

पहला-'शम' अपनी आत्मा को धर्म के कामों में लगाए रखना।

दूसरा- 'दम' मन व इन्द्रियों पर सदा अंकुश लगाए रखना।

तीसरा- 'उपरति' दुष्ट पुरुषों का संग न करना।

चौथा- 'तितिक्षा' निन्दा-स्तुति, मानापमान, लाभ-हानि में एक समान रहना और हर्ष-शोक को छोड़ मुक्ति के कार्यों में लगे रहना।

पांचवां- 'श्रद्धा' वेदादि शास्त्रों और इनके उपदेशकों पर विश्वास रखना।

छठा- 'समाधान' चित्त की एकाग्रता होना।

विशेष बात- अथर्ववेद, मण्डल 19, सूक्त 71, मन्त्र 1 में बताया गया है कि है विद्वानों! सबसे बड़ा वह नहीं है जो मोक्ष पाना चाहता है अपितु वह है जो दूसरों को मोक्ष दिलाना चाहता है। महर्षि दयानन्द को किसी ने कहा था कि तुम वेद प्रचार के पचड़े में क्यों पड़े हो, योग करो तुम्हारी मुक्ति हो जायेगी। स्वामी जी बोले, 'मुझे मेरी चिन्ता नहीं, दूसरों की अविद्या छुड़ाने से ही मेरी मुक्ति हो जायेगी।' **-सत्यवीर आर्य**

आर्य नेता ब्र. राज सिंह आर्य का 62वां जन्म दिवस "संकल्प दिवस" के रूप में सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान आचार्य राज सिंह आर्य का 62वां जन्मोत्सव दिनांक 17 सितम्बर 2015 को ''वेद प्रचार संकल्प दिवस'' स्वरूप में मनाया गया। सत्यसनातन वेद मंदिर, रोहिणी सैक्टर-8 स्थित आश्रम में आचार्य यशपाल शास्त्री के ब्रह्मत्व में बृहद यज्ञ हुआ। जिसमें भजनोपदेश देव, विजय जी महाराज (हरिद्वार), दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य, ब्र. कंचन आर्या, श्री अनिल तनेजा, श्री राजीव आर्य(पटेल नगर) सहित अनेक आर्य नेताओं, विद्वानों ने ब्र. राज सिंह के कर्मयोगी कार्यों की चर्चा की। रात्रि में 'विचार टीवी' पर आचार्य राज सिंह जी का प्रवचन भी प्रसारित किया गया।**-चन्द्र मोहन आर्य**

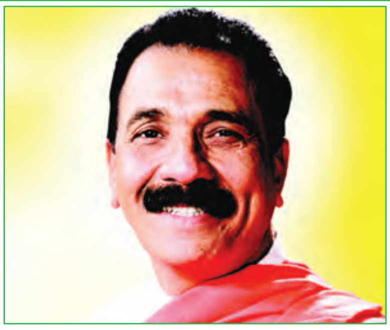

Continue from last issue

Glimpses of the Rig Veda

Hymn to Creation-1

"The Eternal law and Truth are born of arduous penance of the Creator and thence is generated utter darkness, and therefore the space parameter, the plasmic ocean."

Book x, hymn 190 is considered as the indicator of the origin and working of the Universe. The first verse of the hymn points out that the Lord's divine forces work themselves into an intense cognitional activity (Tapas) wherefrom are born 'Rtam' (eternal laws) and 'Satyam' (the rtue translation of the laws into actions).

When we say that the Lord is All-Powerful or Omni-potent, we really mean that His numerous performances do not need assistance from any quarters. His infinite knowledge leads Him to His omnipotence or His infinite power. The Universal activities spontaneously shape up from His unlimited knowledge.

After 'Rtam' and 'Satyam' appears Ratri (utter darkness) undifferentiated, homogeneus matter wherein nothing could be distinguished. Hence, from that is born 'Samudra'-a Nebula having the potentiality of further development. The evolution of the Universe, in each creation takes place in this order. 'Arnava' in the verse denotes activity.

The mystic words 'Rtam' 'Satyam' Ratri, 'Samudra' Arnava are to be understood in the etymological sense and not what is commonly known in Sanskrit.

ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।

ततो रात्र्यजायत ततः समद्रो अर्णवः।। (Rv. x.190.1)

Rtam ca satyam cabhiddhat tapaso adhya ajayata tato ratry ajayata tato ratry ajayata tatah samudro arnavah..

Hymn to Creation-II

"From the plasmic ocean emerges the time-parameter, the year, the controller of the moving world after which began the creation of the days and the nights".

After indefiniteness evolved something definite in the process of activity and movement as revealed in the first verse. The two parameters of space and time were unfolded. The Nebula was evolved as the primordial seed of further evolution, itself representing the space. For the ongoing evolution, the space was not enough. The Sambatsar was born representing time. Samudra as revealed in the preceding verse stands for Nebula instead of ocean as understood in ordinary Sanskrit. This is similar to terms like Virat and Hiranyagarbha elsewhere displayed in some other hymns of creation. Year is born after the creation of Nebula to supplement the time parameter.

The hymn is commonly called Aghamarshana Sukta or the hymn that smashes sins. The Universe is create with tremendous force and mighty intelligence of the Supreme Being with the minutest planning, yet it is ultimately designed for dissolution after the assigned period of sustenance. What, then, is the position of an individual, who is an insignificant speck in the boundless space. If so, why sin?

समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।

अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।। (Rv.x.190.2)

Samudrad arnavd adhi samvatsaro ajayata.

ahoratrani vidadhad visvasya misato vasi.

Nature's Bounties

"May Nature's bounties: the fire, the lightnig, the water, the sun, the wing, divine speech, solar radiations, the sky, the cloud, the firmament, the healing aid, the vital breath, the mother earth and the Supreme Lord be of one consent in awarding us the blessing."

"Knowing the secret of eternal laws, I chant hymns of praise to these law-strengtheners, the unassembled divine powers, majestic in greatness, In their wondrous bounty, they sustain, confer prosperity on us for our deligh."

अग्निरिन्द्रो करुणो मित्रो अर्यमा वायुः पूषा सरस्वती सजोषसः।

आदित्या विष्णुर्मरुतः स्वर्बृहत्सोमो रुद्रो अदितिर्बह्मणस्पतिः।। (Rv x.65.1)

तेषां हि मह्वा महतामनर्वणां स्तोमां इयर्म्यृतज्ञा ऋतावृधाम्।

ये अप्सवमर्णविं चित्रराधसस्ते नो रासन्तां महये सुमित्र्याः।। (Rv x.65.3) -

To Be Continue...

पृष्ठ 3 का शेष

"चारों वेद ...

धरा को ढ़ोते हुए अब मैं (दशरथ) थकगया हूं। अतः मैं राम को राजकार्य में लगाकर विश्राम करना चाहता हूं। यह सुनकर मंत्री परिषद ने राजा दशरथ का प्रस्ताव तुरन्त स्वीकार कर लिया और मंत्रीगण राजा से बोले कि श्री राम सत्य पराक्रमी, धर्म और अर्थ की प्रतिष्ठा करने वाले, चन्द्रमा के समान प्रजा को सुख-शान्ति देने वाले, मधुर भाषी, किए हुए उपकार को न भूलने वाले और जितेन्द्रिय हैं। प्रजा पर कोई आपत्ति आने पर वह स्वयं दुःखी होते हैं और प्रजा की खुशियों मं पिता की भांति प्रसन्न होते हैं, चाहे वह उनका कोई अपना ही क्यों न हो। सज्जनों पर वह कभी क्रोध नहीं करते। अतः ऐसे सत्य पराक्रमी, प्रजा रक्षा में सक्षम, शत्रु नाशक एवं धर्मधुरन्धर श्रीराम को प्रजा अपना राजा बनाना चाहती है। इसी रामायण के पांचवें सर्ग के पहले श्लोक में महाराजा दशरथ के मंत्रियों को धर्मयुक्त प्रजापालक आदि सर्वगुण सम्पन्न, विचार में निपुण तथा इशारों पर काम करने वाला कहा है। मंत्री राज की सदा भलाई चाहने वाले, यशस्वी, ईमानदार, राजकार्य में रत, विद्या-विनय सम्पन्न, जितेन्द्रिय, वेद-शास्त्र के जानने वाले, पराक्रमी, तेजस्वी एवं सत्यवादी आदि अनेक गुणों से सम्पन्न कहे गये हैं। उन मंत्रियों के लिए अपने राज्य में अथवा दूसरे राज्य में कोई भी किया गया या किया जाने वाला कार्य, सदा उनकी जानकारी में रहता था क्योंकि वे सुदृढ़ प्रशासन तथा अपनी कुशल बुद्धि द्वारा गुप्तचरों से सब कुछ जानते रहते थे। सब मंत्री अपने विभागों की पूर्ण जानकारी रखते थे और अन्याय करने पर अपने पुत्रों को भी दण्ड देने में तनिक भी संकोच नहीं करते थे। ऐसे गुणी मंत्रियों से युक्त होकर महाराज दशरथ ने सम्पूर्ण पृथिवी की प्रजा का, अपने पुत्रों के समान पालन किया था। यह था वैदिक संस्कृति के सूर्यवत् प्रकाश में ज्ञान सम्पन्न राजा/राजनेताओं का गुणगान करने योग्य चरित्र, जिनकी सुन्दर राज्य व्यवस्था में सम्पूर्ण प्रजा सुख, सम्पन्न, धर्मयुक्त, धन सम्पन्न एवं प्रत्येक प्रकार से सुरक्षित कही गयी है। परन्तु दुर्भाग्यवश वैदिक संस्कृति का लोप होने से आज की स्वार्थ पूर्ण, स्वयंभू राजनीति ने भारत जैसे महान देश की गरिमा को धन, सुरक्षा, कृषि, विज्ञान, न्याय, व्यवसाय, खेलकूद, धर्मस्थापना एवं सुख शांति इत्यादि प्रत्येक क्षेत्र में ठेस पहुंचाई है।

यह भारत ऋषियों-मुनियों की वह पवित्र भूमि है जिसका नामकरण ही ऋग्वेद मंत्र 10/110/8 में "आ नो यज्ञं भारती तिस्त्रो देवी सरस्वती" में आए "भारती" शब्द के आधार पर किया गया है। भारती शब्द का अर्थ महर्षि यास्क ने निरुक्त ग्रंथ 8/13 में "भरत आदित्यस्तस्य भाः" किया है। भरत नाम आदित्य अर्थात् सूर्य का है। "भा" शब्द का अर्थ रोशनी है। जैसे चांद की रोशनी को चांदनी कहते हैं उसी प्रकार भरत (सूर्य) की भा (रोशनी) भारती है। भारती शब्द का अर्थ संस्कृति है। अतः भारत की वैदिक संस्कृति भारती है। ऋषियों द्वारा दिया हमारे देश का नाम "भारत" है। विश्व में अन्य किसी राष्ट्र का ऐसा गुणसम्पन्न नाम नहीं है। "यथा नाम तथा गुण" इस कथनानुसार पिछले तीन युगों में जब तक भारत भूमि पर वैदिक संस्कृति का सूर्य उगता रहा, तब तक हमारा देश समस्त विश्व में सूर्य की किरणों के समान ज्ञान, कर्म एवं उपासना का प्रकाश करके "विश्व गुरु" एवं वर्चस्व, शौर्य, पुरुषार्थ, कर्त्तव्य आदि निष्ठापूर्वक निभाने में प्रवीण होने तथा दुश्चरित्र एवं दुर्गुणों से दूर होने के कारण "सोने की चिड़िया" कहलाता रहा। राजा/राजनेताओं द्वारा ही धर्म स्थापित किया जाता है परन्तु जब देश के रक्षक ही भक्षक हो जाएं तब सुधार के लिए कोई किसी को क्या कहे?

हमने वेदों के आदेश तो पहले ही ताक पर रख छोड़े हैं परन्तु यदा-कदा ही संस्कृति अथवा रक्षार्थ सम्मेलन में कभी वेदशास्त्र गरिमा विवशता से सुनना भी पड़े तो यह सुनना प्रायः ऐसा होता है कि एक पंडितजी यजमान के यहां कथा कर रहे थे। कथा में यजमानजी सो रहे थे। किसी ने उनको जगाते हुए कहा कि आप कथा में सो रहे हैं। तब नींद से जागते हुए यजमानजी बोले,-अरे भई! घर के पंडित हैं, कोई झूठ थोड़े ही बोलेंगे। वैदिक संस्कृति की इस प्रकार की अनदेखी, औपचारिकता और पुरुषार्थ हीनता ही ने तो भारतवर्ष को गुलाम बनाया था और अब इसकी दुर्गति का पथ प्रशस्त किया हुआ है। वास्तव में इस घर को आग लग गयी घर के चिराग से। इस प्रकार वेदों के परम्परागत ज्ञान के उल्लंघन ने अन्त में फिर वही दुराग्रही के पतनाले वाला प्रश्न खड़ा कर दिया है। लगता है कि सुरक्षा एवं शांति के विषय में अनदेखी करके हमारे नेताओं का झूठी तसल्ली वाला पतनाला वैसे का वैसा ही बहेगा और इस आपस की लड़ाई में विदेशी शक्तियां पंच बनकर लाभ उठाती रहेंगी। देश की दुःखी जनता गरीबी, असुरक्षा, अन्याय आदि से कब और कैसे बच पाएगी, इसका उत्तर अतीत में कौन देगा, यह वर्तमान की एक अनसुलझी गुत्थी है। अतः बताओ अब फिर दलगत गठजोड़ धर्म की आड़ (मज़हब), जातिवाद झूठे वायदे वाली राजनीतिक पार्टी अथवा अन्य केवल कुर्सी की लालसा रखने वाली पार्टी को किस कामना से वोट दें?

पृष्ठ 1 का शेष **भूकम्प पीड़ितों को ...**

दिनांक 22 अगस्त 2015 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी की हुई बैठक में निर्णय लिया गया कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पास नेपाल भूकम्प राहत कार्य के लिए जो धन राशि दान में आई है उस धनराशि से नेपाल के भूकम्प पीड़ित क्षेत्र में लोगों के लिए आवास बनाए जायें तथा यह भी तय हुआ कि जिस क्षेत्र में खाद्य सामग्री वितरित की गयी थी उसी क्षेत्र में आवास बनाए जाएं। बैठक में सर्व सम्मति से तय हुआ कि इस कार्य हेतु दो सदस्यीय एक टीम नेपाल जाए तथा वहां जाकर नेपाल आर्य समाज के पदाधिकारियों के साथ मिलकर पीड़ित क्षेत्र का दौरा करें व आवास बनाने की प्रक्रिया को पूर्ण करें।

बैठक में लिए गये निर्णय के मुताबिक श्री सुखबीर सिंह आर्य मंत्री, एवं डॉ. मुकेश कुमार, मंत्री आर्य समाज शाहबाद मोहम्मदपुर दिनांक 1 सितम्बर 2015 को नेपाल आर्य समाज केन्द्रीय कार्यालय काठमांडू पहुंचे। दूसरे दिन प्रातः यज्ञोपरान्त श्री सुखबीर सिंह एवं डॉ. मुकेश कुमार के साथ नेपाल आर्य समाज के पदाधिकारियों की बैठक हुई। बैठक में नेपाल आर्य समाज के अध्यक्ष श्री कमलाकांत आत्रेय, संरक्षक डॉ. माधव प्रसाद, श्री तारानाथ मैनाली, उपाध्यक्षा श्रीमती किरण जी एवं श्री राज कुमार आर्य उपस्थित थे। बैठक में निर्णय लिया गया कि गांव ढुंगाना व नंलय भारो में अन्य महानुभावों द्वारा जो आवास बनाए जा रहे हैं पहले उन्हें देख लिया जाए। उसके बाद यह निर्णय लिया जाए कि आवास किस प्रकार के बनाये जाने चाहिएं।

दिनांक 4 सितम्बर 2015 को सभी पदाधिकारियों द्वारा ढुंगाना, नंलय भारो, फटकशिला, गोदावरी, ललितपुर आदि क्षेत्रों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के बाद तय हुआ कि 19 फुट बाई 23 फुट आकार के जस्ते के शेड बनाये जायें। जिनका डिजाईन झोंपड़ीनुमा होना चाहिए। इस कार्य हेतु नेपाल आर्य समाज के केन्द्रीय कार्यालय काठमांडू में एक बैठक बुलाई गयी जिसमें सूर्य-चन्द्र इन्वेस्टमेंट, प्राईवेट लिमिटेड के मालिक श्री माधवजी के साथ नेपाल आर्य समाज के पदाधिकारियों की बात-चीत हुई जिसमें रु. 72500 प्रति शेड (मैटीरियल सहित) रेट फाईनल कर अनुबंध कर दिया गया। जिस पर फिटिंग, मार्ग व्यय एवं फिनिशिंग आदि मिलाकर लगभग 80000/- रुपये (नेपाली) में एक मकान तैयार होगा। बैठक में दिल्ली से गये श्री सुखबीर सिंह व डॉ. मुकेश कुमार भी शामिल थे। बैठक में यह भी निर्णय हुआ कि जो धनराशि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पास एकत्र हुई है उसे नेपाल आर्य समाज को दान स्वरूप दे दी जाए तथा नेपाल आर्य समाज के पदाधिकारी अपनी देख-रेख में शेड निर्माण का कार्य सम्पन्न कराकर सारी रिपोर्ट सभा को सौंपेंगे। इसी दिन आर्य समाज शाहबाद मुहम्मदपुर नई दिल्ली की ओर से भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ भेजे गये कपड़े नेपाल की भूकम्प पीड़ित महिलाओं को वितरित किये गये तथा दवाओं से भरा एक बॉक्स भी प्रभावित क्षेत्रों में वितरण हेतु नेपाल आर्य समाज के पदाधिकारियों को सौंपा गया। आशा की जाती है कि नेपाल में शेड बनाने का कार्य जल्दी ही पूरा हो जाएगा। इस कार्य हेतु जो महानुभाव अपना आर्थिक सहयोग देना चाहें वे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-01 में नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेज सकते हैं।

-सुखबीर सिंह, मंत्री

पृष्ठ 1 का शेष **क्या सच को ...**

जाता है कि यदि अतीत का निर्माण इनके हाथों हुआ होता तो शायद आज भविष्य ऐसा न होता। 1947 -15 अगस्त के दिन जब ब्रिटिश झंडे पर भारत का सितारा बुलन्द हुआ। भारत माता की जय के उद्घोष से आसमान गूँज उठा था। भारत के भाग्य विधाता साधू संत या कोई चमत्कार या राजा-महाराजा नही थे बल्कि वे क्रान्तिकारी थे जो अपना सर्वस्व इस देश पर लुटा गये जिनमें एक नाम था नेताजी सुभाषचन्द्र बोस । लेकिन नेताजी को लेकर यहां एक प्रश्न अभी तक अनुत्तरित है कि नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की मौत कैसे हुई ? या नेता जी कहाँ है?

मैं यहाँ कुछ नया कहने नहीं आया मेरी कोशिश मात्र इतनी है कि देश के सामने एक सच वह भी आ जाये जिसकी तलाश समस्त देशवासियों को एक अरसे है। वैसे देखा जाये तो नेता जी की मौत के सच को सामने लाने के लिये सरकारों की ओर से कई कमीशन, आयोग और कमेटी बैठायी गयी लेकिन हर बार आधा-अधूरा सच सामने आया जैसे उस सच को चूहों ने कुतर रखा हो। और न जाने नेता जी पर कितनी किताबें भी लिखी गयीं पर हमेशा विमानदुर्घटना, धूएं का गुब्बार और किताब का अन्त कर दिया जाता। सरकारा द्वारा कभी नेताजी के किसी सहभागी और प्रत्यक्षदर्शी से संपर्क नहीं किया गया। आजमगढ़ के इस्लामपुरा बिलरियागंज में रहने वाले 107 साल के निजामुद्दीन खुद को आजाद हिन्द फौज में नेताजी का ड्राईवर बताते हैं। उनके मुताबिक उन्होंने 1942 में आजाद हिन्द फौज में जाने के बाद 4 साल नेताजी के साथ गुजारे। निजामुद्दीन को यकीन है कि नेताजी की मौत प्लेन हादसे में नहीं हुई और यही बात ताईवानी अखबार सेंट्रल डेली न्यूज से पता चलता है कि 17 अगस्त 1945 के दिन ताईवान के ताइहोकू हवाई अड्डे पर कोई विमान दुर्घटनाग्रस्त नही हुआ। यद्धपि 1965 में भारत सरकार द्वारा गठित शहनवाज आयोग जिसको नेताजी की मौत के बारे में जाँच के लिये बैठाया गया था। उसको जांच के लिये ताईवान नहीं जाने दिया गया और आयोग ने भारत में बैठकर ही अपनी जाँच पूरी कर ली हालांकि बाद में आयोग के अध्यक्ष को इसका सुखद

काश नेताजी की राख पर भी उनके परिजनों को हक मिल पाता। खैर अब यदि वर्तमान सरकार सच सामने लाना ही चाहती है तो लगे हाथ गणेश शंकर विधार्थी और श्यामा प्रसाद मुखर्जी की मृत्यु का भी सच सामने आना चाहिये...

पुरुस्कार भी मिला। उन्हें मंत्रिमंडल में शामिल कर लिया गया। 1970 में बना जे डी खोसला आयोग जिसको ताईवान तो जाने दिया गया पर वहां पर किसी सरकारी संस्था से मिलने नहीं दिया गया। इसके पीछे सरकारी क्या मंशा थी, क्या नही! यह तो सरकार जाने या राजनेता!

पर इतना सब जानते हैं कि खोसला आयोग की जांच द्वारा जो सच सामने आया उसे कुछ फाईल में समेटकर चूहों को परोस दिया गया, ताकि रहस्य बरकरार रहे। इसके बाद बना मुखर्जी आयोग उस ने सरकार से जिन- जिन दस्तावेजों की मांग की वे नहीं दिये गये और जिसे लेकर तरह-तरह की दलीलें दी गयी कि यदि जांच को सार्वजनिक किया गया तो मित्र राष्ट्रों से संबधों पर फर्क पड़ सकता है। अब यदि नेता जी के प्रपोत्र चंद्रकुमार बोस की माने तो पूर्व प्रधानमंत्रियों जवाहर लाल नेहरु ,इदिरा गांधी और बंगाल के दो पूर्व मुख्यमंत्रियों पर नेता जी के गायब होने से संबंधित अनेक प्रमुख साक्ष्य नष्ट करने, आपसी सांठगांठ का आरोप लगाते हुए कहा कि राज्य सरकार द्वारा सार्वजनिक की गई पत्रावलियों से ऐसे सबूत मिल रहे है कि नेताजी कम से कम 1964 तक जीवित थे। अब एक बार फिर सरकार के आदेशनुसार नेताजी की सिक्रेट फाईल से सरकारी धूल हटते ही सबसे बड़ा खुलासा यह हुआ कि फाईल नम्बर 62 में बोस के रिश्तेदारों के पीछे जासूसी का सच सामने आया। अब इस सत्य से भी सब परिचित हैं कि इन छुटमुट बातों के अलावा कोई और बड़ा सच सामने की गुंजाइश नही है। क्योंकि दस्तावेज है नहीं। उन्हें तो सरकारी चूहें कब खा गये कोई नहीं जानता पर मन में एक बात जरुर उफान लेती है कि गोडसे ने अपनी वसियत में अपनी चिता की राख अपने परिजनों को सौंपने की बात कही थी काश नेताजी की राख पर भी उनके परिजनों को हक मिल पाता। खैर अब यदि वर्तमान सरकार सच सामने लाना ही चाहती है तो लगे हाथ गणेश शंकर विधार्थी और श्यामा प्रसाद मुखर्जी की मृत्यू का भी सच सामने आना चाहिये..

-राजीव चौधरी

डॉ. महेश विद्यालंकार जी का नया संपर्क सूत्र

वैदिक विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार जी का निवास का टेलीफोन नम्बर परिवर्तित हो गया है, जो कि अब टेलीफोन नम्बर 011-47064357 है कृपया नोट कर लेवें।

SUITABLE MATCH

Suitable match for Punjabi Rajput handsum, fair non-manglik boy 5'-10", 07-07-1975, 23.45 hrs. Delhi; B.Com (D.U.) and Professional Trainings. Own well settled electronic business with brother, a Pvt.Ltd. Company. Income 6lacs p.a, own house. Seeks qualified working/non-working girl from cultured & respectable family. No dowry.Mail girl's profile & photo at

"deep5914@gmail.com"

9212326285, 9810414037.

साप्ताहिक आर्य सन्देश

21 सितम्बर से 27 सितम्बर, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 24 सितम्बर/ 25 सितम्बर, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 23 सितम्बर, 2015

प्रतिष्ठा में,

ओ३म्

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्त्वावधान में

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)

की प्रेरणा से

आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली

के सौजन्य से

एकरूप यज्ञ प्रशिक्षण व अभ्यास कार्यशाला

"घर घर यज्ञ - हर घर यज्ञ"

शुभारम्भ सत्र सायं 5.30 से 7.00 बजे शनिवार, 10 अक्टूबर 2015

समापन सायं 5.00 से 6.30 बजे रविवार, 18 अक्टूबर, 2015

प्रशिक्षण सत्र प्रात: 6.30 से 8.00 बजे व 5.30 से 7.00 बजे

(सभी प्रशिक्षणार्थी समय से 15 मिनट पहले अवश्य पहुंचे।)

स्थान : आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली-110015

शुभारम्भ ब्रह्मा

आचार्य एम. आर. राजेश जी

(कालिकट, केरल)

सहयोग : आ. विवेक

आ. अरुण, आ. साजिथ

डॉ. ऋषिपाल शास्त्री

सभी याज्ञिक सदस्य एक समान गणवेश धारण करके स्वयं के यज्ञ कुण्ड पर अभ्यास करेगें

पुरुष : धोती व शाल   महिलायें: साड़ी

केवल 50 सदस्य मान्य (प्रात:कालीन व सायंकालीन सत्र में) तथा प्रत्येक आर्यसमाज से अधिकतम 5 सदस्य

पंजीकरण एवं प्रशिक्षण शुल्क : 1000/- (घी, सामग्री, दीपक समिधा व गणवेश आदि व्यय)

संयोजक : सतीश चड्डा - 09540041414

सह संयोजक : राजेन्द्रपाल आर्य, राधेश नांगिया, श्री चन्द अग्रवाल, सतीश जुनेजा, कविता आर्या

निवेदक

धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	विद्यामित्र ठुकराल
प्रधान	महामंत्री	कोषाध्यक्ष

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका का गहन-गम्भीर अध्ययन-प्रवचन, एक वर्ष से निरंतर जारी

आर्य समाज जनकपुरी सी-3 में महर्षि दयानन्द के प्रस्थानत्रयी ग्रन्थों में ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका का गहन-गम्भीर अध्ययन-प्रवचन एक वर्ष से निरन्तर सोम. मंगल, गुरु और शुक्रवार को सांय 6.30 से 7.30 बजे होता है। जिन ऋषि भक्तों को ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पढ़ने की इच्छा हो वे उपरोक्त दिनों मे निर्धारित समय में आकर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

- शिव कुमार मदान

चुनाव समाचार

आर्य समाज, इन्द्रपुरी, नई दिल्ली -12

प्रधान - डॉ.जे. एस.बालियान

मंत्री - श्री जितेन्द्र आर्य एडवोकेट

कोषाध्यक्ष - श्रीमती सुदेश चड्ढा

आर्य समाज राधापुरी का 60वां वार्षिकोत्सव

2 अक्टूबर 2015

समय: प्रात: 7.30 से 2.30 बजे

यज्ञ ब्रह्मा: पंडित अवनीश शास्त्री

प्रवचन: आचार्य ऋषिदेव

भजन: श्रीमती दया ऋषिदेव

आप सब सादर आमंत्रित हैं।

-ऋषि राज वर्मा, मंत्री

आर्यसमाज मानसरोवर पार्क का 30वां वार्षिकोत्सव

9 से 11 अक्टूबर 2015

समय: प्रात: 7.30 से 1.00 बजे

यज्ञ ब्रह्मा: डॉ. शिव पूजन विद्यालंकार

भजन: पंडित सुखपाल आर्य

आप सब सादर आमंत्रित हैं।

-जगदीश प्रसाद शर्मा, प्रधान

मन की आवाज - पूर्ण विश्वास के साथ

आबादी बढ़ने के साथ-साथ प्रदूषण और बीमारियाँ भी बढ़ती जा रही हैं!

इन हालात को देखकर दुखी हुए महाशय धर्मपाल जी ने सोच-विचार किया और यह उनके मन की आवाज है जो उन्होंने पूरे विश्वास के साथ कही है :-

यज्ञ करो — प्रदूषण से बचो

दिल्ली की हर कॉलोनी में, हर मोहल्ले में, हर विद्यालय में डेंगू और बीमारियों के कीटाणुओं को दूर भगाने के लिए शुद्ध घी और औषधीय गुणों से युक्त हवन सामग्री से यज्ञ करें।

महाशय धर्मपाल

यज्ञ कराओ—डेंगू आदि रोगों के कीटाणुओं को भगाओ

शुद्ध, पवित्र एवं प्राकृतिक औषधीय (गिलोय आदि) जड़ी-बूटियों से निर्मित हवन सामग्री में रोगों से लड़ने की अद्भुत क्षमता है।

नोट :- आर्य समाज और एम.डी.एच. के संयुक्त तत्वावधान में, दिल्ली में 500 स्थानों पर प्रदूषण मुक्ति यज्ञों का आयोजन होगा। आप सब भी अवश्य भाग लें।

-: कार्यक्रम आरम्भ :-

22 सितम्बर, 2015 (मंगलवार) प्रात : 10.30 बजे से

(यह अभियान 30 सितम्बर, 2015 तक चलेगा)

-: स्थान :-

एस.एम. आर्या पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग (पश्चिमी), नई दिल्ली

सौजन्य :- MDH

असली मसाले सच - सच

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रेस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य   सह सम्पादक: विनय आर्य   व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान   सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह